॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! मेरा जो क्रियात्मक जीवन है, मैं उसे सदैव चाहता रहता हूँ कि मेरा जीवन इस संसार में कर्मठता को प्राप्त होता रहे। क्योंकि कर्मठता ही तो जीवन है, अकर्मण्यता ही मृत्यु हैं, जिसे हमें जानना है। हम सदैव अपने जीवन में विचार-विनिमय करते रहते हैं। हे भगवन्! तू वास्तव में विचारकों का भी विचारक है, सदैव अखण्ड रहने वाला है, तेरा संसार में कोई विभाजन भी नहीं कर पाता, तू इतना महान् है और विभु माना गया है जो सर्वत्र ओत-प्रोत है। मैं आपके चरणों की वन्दना करने आ रहा हूँ, प्रभु! यह जो अन्तरिक्ष है यह आपका मस्तिष्क ही है, प्रभु! ये जो दिशाएँ हैं यही तो आपकी भुजाएँ हैं, यह पृथ्वी ही तो आपके तालू का कार्य कर रही है, भगवन्! आप जो पृथ्वी पर विचरने वाले नदीवत् हैं, यह आपके नाना स्त्रोत हैं, आपके शरीर के स्त्रोत हैं, पर्वत अस्थियों का कार्य करते रहते हैं। भगवन्! यह जो सारा जगत है यह एक ब्रह्म के स्वरूप में मुझे दृष्टिपात आ रहा है।

प्रभु! यह जो संसार मुझे दृष्टिपात आ रहा है यह क्या है? इसको मैं जान नहीं पाता, जहाँ केवल अपने ही मानववत को नष्ट किया जाता हो। प्रभु! मुझे यह जगत सुन्दर प्रतीत नहीं होता, मुझे तो केवल एक ब्रह्म ही प्रतीत होता है, जिसका यह विराट ब्रह्माण्ड एक शरीरवत् प्रतीत होता है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 573 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 648
वर्ष : 49 44 समग्र वर्ष : 55

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. याज्ञिक	पूज्यपाद-गुरुदेव एवं महर्षि महानन्द मुनि जी महाराज	5-16
4. आत्मतत्त्व	पूज्यपाद-गुरुदेव	17-32
5. माँ दुर्गा	पूज्यपाद-गुरुदेव	33-37
6. ऋषियों के उद्‌गार		38
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

आप सभी को दशहरा की हार्दिक शुभकामनाएँ

॥ ओ३म् ॥

याज्ञिक

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके सर्वज्ञता की प्रतिभा का दर्शन होता रहता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं और याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है। और वह उसी में वास कर रहा है। क्योंकि ये जो परमपिता परमात्मा का एक अनूठा जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, ये उस परमपिता परमात्मा की एक यज्ञशाला है। और यहाँ प्रत्येक प्राणीमात्र याज्ञिक बन करके आया है। और यह याग करना उसका मानवीयत्त्व कहलाता है।

हवि

आज का हमारा वेद का पठन-पाठन अथवा कहीं से मुझे, हमें ये प्रेरणा आ रही है कि याग के सम्बन्ध में कुछ विचार-विनिमय दिया जाए। वास्तव में बहुत से याग के सम्बन्ध में अपने विचार देते रहते हैं। क्योंकि ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। और ये मानव का शरीर भी एक प्रकार की यज्ञशाला है। इसीलिए प्रत्येक मानव हवि बन करके आया है और हवि देने के लिए आया है। विचार आता रहता है कि हवि बन करके इसीलिए आया है कि प्रत्येक मानव जैसे हवि में से सुगन्ध उत्पन्न होती है इसी प्रकार प्रत्येक मानव के जीवन में सुगन्ध होनी चाहिए। क्योंकि सुगन्ध का अभिप्रायः ये है कि उसके चरित्र की सुगन्ध और उसके मानवीयता और क्रियाकलाप इतने विचित्र होने चाहिए जिससे वो सुगन्धित बना रहे। तो जितना भी जैसे साकल्य

में सुगन्ध होती है और उसे अग्नि विभक्त कर देती है अथवा उसका विभाजन कर देती है। इसी प्रकार जिस मानव, जो मानव स्वतः हवि बन करके आया है उसके मानवीय क्रियाकलापों में सुगन्ध होनी चाहिए। जिससे उसकी सुगन्धी से ये मानवीय समाज सुगन्धित बना रहे। तो वह हवि कहलाती है। क्योंकि वह हवि बन करके आया है। और हवि देना उसका कर्त्तव्य है। मानो देखो, नाना प्रकार के साकल्यों के द्वारा वो याग करता है। और वह मानो देखो, हवि प्रदान कर रहा है। वह हवि जहाँ बनता है, वहाँ हवि प्रदान भी कर रहा है। तो वह जो हवि है वही मानव को पवित्र आभा में परणित करती चली जाती है। इसीलिए हमारा वेद का मन्त्र ये कहता है **"हव्याम् भूवर्णस्सुतम् ब्रह्माः"** क्योंकि वह जो परमपिता परमात्मा है वो स्वतः ब्रह्मा है। और वह ब्रह्मा होने से मानो देखो, उसका याग चल रहा है और वह सुगन्ध के द्वारा मानो देखो, इस समाज को सुगन्धित बना रहा है। तो वह **परमपिता परमात्मा ब्राह्मण हैं और वह हमारे हृदयों में विद्यमान रहते हैं।** तो इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर मानो सदैव गम्भीरता से मनन और चिन्तन करते रहें। तो मेरे प्यारे! आज का वेद मन्त्र ये कह रहा है **"हव्याम् भूतम्"**।

परमपिता परमात्मा का याग

मेरे पुत्रों! देखो, ये परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है, याग उसका आयतन है। आयतन कहते हैं जहाँ वो वास कर रहा है। मानो उसका गृह है। ये ब्रह्माण्ड उस परमपिता परमात्मा का गृह है और उसमें वो वास कर रहा है। तो विचार आता रहता है कि वह परमपिता परमात्मा एक महान् है और पवित्रतम् कहलाता है। मैंने तुम्हें कई कालों में याग के ऊपर बेटा! बहुत से विचार दिए। और इन यागों में मानो देखो, वेद के मन्त्रों को जब चिन्तन करने से ये हमें प्रतीत होता है, क्या वेद का मानो देखो, आधा भाग क्या, सर्वत्र भाग एक ही प्रकार की यज्ञशाला के रूप में और याग के और हवियों के रूप में मानो देखो, उसमें प्रतिष्ठित होता रहा है। इसीलिए हमें

प्रत्येक वेद मन्त्रों के द्वारा मुनिवरों! देखो याग के ऊपर विचार-विनिमय करना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, ये प्रत्येक मानव का जितना भी क्रियाकलाप है, वह जो भी क्रिया कर रहा है–चाहे वो वैज्ञानिक बन करके, चाहे वह माता अपने बाल्यों का पालन करने वाली हो, चाहे मानो वो राष्ट्रवेत्ता हो। कोई भी मानव मानो देखो, सर्वत्र एक यज्ञमयी स्वरूप माना गया है। तो विचार आता रहता है यह सर्वत्र परमपिता परमात्मा का एक याग प्रारम्भ हो रहा है। तो आओ मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें कुछ ऋषि-मुनियों के समीप ले जाना चाहता हूँ। जहाँ ऋषि-मुनि अपने में बेटा! देखो, याग के ऊपर विचार-विनिमय करते रहे हैं। मैंने बेटा! इससे पूर्व काल में तुम्हें दक्षिणायण और उत्तरायण की कुछ चर्चाएँ कीं। मानो शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष की कुछ चर्चाएँ कीं। मानो देखो, वह चर्चाएँ ही अपने में बड़ी विशिष्ट मानी गयी हैं।

महारानी द्रोपदी का याग

मुझे स्मरण आता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, जब पितामह भीष्म मृत्यु की शय्या पर विद्यमान थे तो उस समय मुनिवरों! देखो उनका आत्मज्ञान चलता रहता था। वे अपने विचारों की हवि प्रदान कर रहे थे। तो मुनिवरों! देखो उस समय महारानी द्रोपदी उनके समीप मानो विद्यमान हो महान् याग कर रही थी। याग कैसे? मानो देखो जब अन्न का पान कराती तो गायत्री जपन करती हुई, गायत्री का अध्ययन करती। मानो देखो, अन्नाद को प्रदान करती रहती थी। मेरे प्यारे! देखो, **ऋषि कहते हैं, आचार्यजन कहते हैं कि जो माता अपने गृह को ऊँचा बनाना चाहती है, वह मानो जिस समय अन्नाद को अपने में देखो निर्माण करती है, तो उस समय वह गायत्री मन्त्रों का पठन-पाठन करती रहे। जिससे देखो उसके हृदय से जो तरङ्गें उत्पन्न हो रही हैं, उन तरङ्गों में मानो वो तरङ्गें उस अन्न में विद्यमान हो जाएँ।** क्योंकि इसीलिए अन्न का हमारे यहाँ पवित्र होना बहुत अनिवार्य है। कोई भी मानव मुनिवरों! देखो अन्नाद की उत्पत्ति जब करता है अथवा निर्माण करता है तो उसका विचार सुसज्जित होना चाहिए। और विचारों में

एक महानता होनी चाहिए। क्योंकि वो आत्मा की हवि है। वो शरीर की हवि कहलाती है जो मन तक उसकी तरङ्गें जाती हैं और प्राण की वृत्तियों में रत्त हो करके मुनिवरों! देखो आत्मा उन्नत होता रहता है।

पितामह भीष्म द्वारा याग की विवेचना

मेरे प्यारे! देखो, स्मरण आता रहता है। ये देखो द्वापर के काल में मेरे प्यारे! मृतक शय्या पर विद्यमान होने वाला "त्रेताम् भूवर्ण वर्णे देवत्वाम्"। मेरे प्यारे! देखो, चरणों में विद्यमान हो करके और पितामह से अपनी आत्म उत्थान के लिए वो चर्चाओं को श्रवण कराती रहती थी। उन्होंने कहा, हे प्रभु! मैं ये जानना चाहती हूँ कि याग किसे कहते है? जहाँ आप आत्मा का याग करना जानते है और देखो आत्मतत्त्व की वार्त्ता को प्रकट करते रहते हैं। मैं आत्म देखो याग को जानना चाहती हूँ। तो उस समय पितामह भीष्म ने कहा, हे देवी! हे दिव्या! देखो संसार में ये जो याग हो रहा है। परमपिता परमात्मा का जो अनूठा याग हो रहा है। जिस यज्ञशाला में सर्वत्र देवता विद्यमान रहते हैं और सर्वत्र देवताओं के द्वारा जो हवि हो रही है, वही तो मानव को प्रदान की जाती है। हे देवी! एक समय मानो देखो, मुझे स्मरण है। एक समय मानो देखो, मेरे पूज्यपाद परशुराम जी, जब मुझे अस्त्रो-शस्त्रों की विद्या प्रदान करते थे। तो एक समय भ्रमण करते हुए मानो देखो, महर्षि सुनीति मुनि के द्वार पर पहुँचे। और महात्मा सुनीति ने हमारा देखो पूज्यपाद गुरुदेव का स्वागत किया। और उन्होंने ये कहा था, पूजयपाद ने सुनीति से, हे भगवन्! देखो तुम याग कर रहे हो प्रातःकाल में। ये याग क्या है? उन्होंने कहा कि याग क्या नहीं है। तो पूज्यपाद गुरुदेव देखो इस सम्बन्ध में मौन हो गए। परन्तु सुनीति मुनि ने कहा था, क्या ये जो ब्रह्माण्ड है एक प्रकार की यज्ञशाला है और उसमें हवि देना। देखो, जब परमपिता परमात्मा ने सृष्टि का सृजन किया तो ये मानो देखो, याग ही है जो संसार को सुगन्धित बनाता है। और प्रत्येक शब्द जो वेद मन्त्रों से, देखो वेद मन्त्रों की आभा में निहित रह करके गमन करता रहता है। और वो द्यौ में प्रवेश करता रहता है। वही तरङ्गें बन करके मानव के समीप

आती रहती हैं। तो इसीलिए सुनीति मुनि ने कहा, ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में विद्यमान रहता है।

याग करने की प्रेरणा

मेरे प्यारे! देखो, ''शब्दम् गमनम् ब्रह्म। शब्दम् द्रव्य ब्रव्हा द्यौ लोकाम् हिरण्यम् वृथाः।'' यही शब्द है जो मानो देखो, गृहों का निर्माण करता है। जिस गृह में वेद मन्त्रों के द्वारा याग होता है, वो गृह पवित्र होता है और उस गृह में मानो देखो, देवता वास करते हैं। और जिस राजा के राष्ट्र में देखो याग होता है। और राजा के राष्ट्र याज्ञिक बने। तो प्रत्येक गृह में जब याग की और साकल्य की अग्नि के माध्यम से जब सुगन्धी मानो जब ''चरन प्रवणम् ब्रहे'' वह देखो ओत-प्रोत हो जाती है तो राजा का राष्ट्र पवित्र बन जाता है। और समाज में एक महानता की स्थापना आ जाती है। तो इसीलिए वैदिक ऋषि ने कहा, क्या वेद तो याग के लिए पुकार रहा है। इसीलिए प्रत्येक मानव को याग करना चाहिए।

भिन्न-भिन्न प्रकार के याग

मेरे पुत्रों! देखो, महाराजा अश्वपति के यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहता था। जैसे हमारे यहाँ अश्वमेध याग है। अजामेध याग है, रुद्र याग है, विष्णु याग है, ब्रह्म याग है। मानो देखो, और भी नाना जैसे देवी याग, कन्या याग, मुनिवरों! देखो और भी नाना प्रकार के जैसे अश्वमेध और देखो अजा ब्रह्मेः मुनिवरों! देखो वाजपेयी और अग्निष्टोम यागों का वर्णन होता रहता है। यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहता है। मेरी प्यारी माता! जो अपने गर्भस्थल में शिशु की पालना करती है। और वह पालना के मूल में मानो वेदों का मन्त्रों का अध्ययन करती रहती है। और उसके गर्भ में प्रवेश होती रहती है। माता अपने गर्भस्थल में देखो बालक का निर्माण कर देती है। देखो, हम जैसे शिशु जब माता के गर्भस्थल में विद्यमान होते हैं तो माता वेद के मङ्गलम् ब्रम्हे क्रतम् देती हुई, मानो वेद के मन्त्रों का उद्गीत गाती हुई अपने में याग

हो रहा है। ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला हैं। जिस यज्ञशाला में हम सब विद्यमान हो करके, मेरे पुत्रों! देखो, हवि प्रदान करते हैं। और यज्ञशाला में मुनिवरों! देखो, यजमान अपने में हुत कर रहा है। जैसे महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! देखो, जो भी अतिथिगण जाता–उसके यहाँ का एक नियम था क्या, उनके यहाँ का एक नियम था क्या उनके यहाँ एक यज्ञशाला थी। वो याग करते रहते थे। और जब हुत करते रहते तो मेरे पुत्रों! देखो, उनके चित्रों का उन्हें दर्शन होता रहता था। तो इसीलिए क्योंकि द्यौ में ब्रह्मणाः वे द्यौ में ही प्रवेश करने वाले चित्र कहलाते थे।

मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा इस सम्बन्ध में प्रगट नहीं करूँगा। केवल ये, क्या प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। क्योंकि ये ब्रह्माण्ड एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ प्रत्येक मानव याज्ञिक बनने के लिए आया है। ये पृथ्वी नाभि कहलाती है, ब्रह्माण्ड की नाभि कहलाती है। परन्तु नाभि के, यदि ये प्रश्न किया जाए कि पृथ्वी की नाभि क्या है। तो आचार्यों ने कहा कि ये जो यज्ञशाला है, यही नाभि कहलाती है। जैसा मुनिवरों! देखो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ, मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी ये प्रश्न करते रहते, क्या महाराज याग कैसे करें। तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, क्या याग तुम्हें करना है तो मानो नाना प्रकार की समिधाएँ होनी चाहिए, साकल्य होना चाहिए। और साकल्य के द्वारा हमें याग करना चाहिए। यज्ञशाला का निर्माण जैसे देखो पृथ्वी की ये नाभि कहलाती है। नाभ्याम् भूतम् ब्रह्माः, इसमें तुम याग करने के लिए तत्पर हो जाओ। मेरे प्यारे! पुनः ब्रह्मचारियों ने कहा, प्रभु! हम याग करना चाहते है परन्तु याग कैसे करें? उन्होंने कहा, अमृतम् ब्रह्मेः देखो याग करते रहो, तुम अग्नि के द्वारा। अग्नि के माध्यम से याग करते रहो। उन्होंने कहा, प्रभु! समिधा भी होनी चाहिए। उन्होंने कहा, यत्रतम्। उन्होंने कहा कि समिधा किसे अमृतम्। मानो कहीं ये सुविधा न हो तो याग कैसे करें? उन्होंने कहा, यदि समिधा हों तो अग्नि को प्रदीप्त करके, मानो देखो, साकल्य न हो तो उसमें समिधा को प्रदीप्त करके अग्नि के द्वारा, देखो समिधा के द्वारा याग करना

चाहिए। उन्होंने कहा, महाराज यदि कहीं समिधा भी न हो तो अग्नि भी न हो तो याग कैसे करें? उन्होंने कहा, तुम मानो देखो, अमृतम्, जल के द्वारा, प्रोक्षण के द्वारा याग कर सकते हो। क्योंकि ये भी याग का एक अङ्ग माना गया है। तो मुनिवरों! उन्होंने कहा, प्रभु कहीं जल भी न हो। तो उन्होंने कहा, पृथ्वी की रज से तुम स्वाहा उच्चारण करो। ''अग्नेय प्राणम् क्रतम् स्वाहा'' ऐसा उद्गीत गाते हुए तुम याग करो। उन्होंने कहा, प्रभु कहीं मानो साकल्य भी न प्राप्त हो। उन्होंने कहा, ''अब्रव्हे व्रतम्'' और कहीं मानो देखो, जल भी प्राप्त न हो तो कैसे याग करें? उन्होंने कहा, मन के द्वारा तुम याग करने के लिए तत्पर हो जाओ। और मन के द्वारा मानो देखो, मन से वेद मन्त्रों का उद्गीत गाओ। और यह कहते रहो, प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा। नन्द्रम् ब्रव्हे क्रतम् देवत्वाम् स्वाहा। ऐसा उद्गीत गाते हुए तुम याज्ञिक बनते रहें।

मेरे पुत्रों! ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया, तो ब्रह्मचारीजन अपने में मौन हो गए। तो विचार आता रहता है। वेद का मन्त्र कहता है कि ये संसार एक प्रकार की यज्ञशाला है। यहाँ याज्ञिक बनो और याग करने वाले बनो। तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार मैं ये विशेषता में नहीं। आज का विचार केवल ये कि हम याज्ञिक बनने वाले बने। अब मेरे प्यारे महानन्द जी! दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्गार

''ओ३म् दिव्याम् रथम् मनाः वरूणश्चमम् यज्ञौ रेव सञ्जना वायुगताः''

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव, याग के सम्बन्ध में अपना विचार दे रहे थे। और याग अपने में एक व्यापिक शब्द है और व्यापिक क्रियाकलाप है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो बिखरे हुए याग के विचारों को परणित कर रहे थे। क्योंकि याग अपने में बिखरा हुआ नहीं है। याग अपने में मानो एक धारा है और जो पृथ्वी से ले करके द्यौ तक इसकी धारा गमन करती रहती है। वह बड़ा

अनूठा है। परन्तु यह हमारी जो वाणी है, ये पृथ्वी मण्डल पर, मृत मण्डल में जा रही है। और वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ। मेरा अन्तरात्मा देखो यजमान के सहित रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मेरी सदैव ये कामना रहती है।

ऋषि की कामना

देखो, ऐसा ये जो काल है, ये वाममार्ग का काल चल रहा है। इस समय राजा भी वाममार्गी है और प्रजा भी वाममार्गी बनी हुई है। परन्तु ऐसे काल में याग होना, हवि देवताओं को प्रदान करना ये मैं ये जानता हूँ कि ये देखो यजमान का सौभाग्य है। और ऐसे काल में, जो देखो ये वाममार्ग का काल है, क्योंकि राष्ट्रवेत्ता भी देखो अपने में, विचारों में विपरीत हो गए हैं। और समाज में भी वाममार्ग उसे कहते है जो उल्टे मार्ग पर गमन कर रहा है। यथार्थ मार्ग में नहीं विचार रहा है। सुरा और सुन्दरी और द्रव्य में जो लगा हुआ प्राणी मात्र है ये वो अमृतम्, वह वाममार्ग काल कहलाता है। क्योंकि संसार में, जो मानो देखो, ऐसा काल आ जाता है, जिस काल में राजा भी द्रव्यपति बनना चाहता है। समाज भी द्रव्यपति बनना चाहता है। प्रत्येक मानव द्वारा जहाँ द्रव्य की पुकार हो रही है तो ऐसे काल को देखो हमारे यहाँ वाममार्ग काल कहा जाता है। द्रव्य मानव के लिए, उपचार के लिए होता है। द्रव्य राष्ट्र की उन्नति और देखो राष्ट्र को गमन कराने के लिए होता है। राजाओं को चाहिए कि अपने द्रव्य को एकत्रित न करें। और वे वाममार्ग प्रवृत्ति को त्याग करके राष्ट्र को उन्नत बनाते रहें। ऐसी मेरी कामना रहती है। हे यजमान! तेरे जीवन में सदैव देखो, गृह में और जीवन में द्रव्य को सतोपयोग होना बहुत अनिवार्य है। जहाँ द्रव्य का सतोपयोग होता है वहीं मानो देखो, द्रव्य क्रियाकलापों में परणित हो करके, पवित्र हो करके गमन करता रहता है।

राजा का कर्त्तव्य

आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये वर्णन कराने के लिए आया हूँ। क्योंकि मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रगट करते हुए

कहा था, क्या आधुनिक काल का जो राष्ट्रवेत्ता है अथवा राष्ट्र है वह अवनति के मार्ग पर गमन कर रहा है। जहाँ उसे उन्नत होना चाहिए, जहाँ उसे मानो राष्ट्र में शान्ति की स्थापना होनी चाहिए, वहाँ अशान्ति का मानो देखो, अपने में नृत हो रहा है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा करता हूँ, क्या इस प्रकार का नृत नहीं होना चाहिए। मङ्गलम् ब्रह्मेः, देखो यहाँ रूढ़िवाद को नष्ट करना चाहिए। यह जो रूढ़िवाद है, जो मानो देखो, नाना प्रकार की रूढ़ियों में राष्ट्र अपने में गमन कर रहा है। मैं यह कहा करता हूँ कि राजा को चाहिए कि अपने राष्ट्र में रूढ़ि न रहने दें। यहाँ नाना प्रकार की रूढ़ियाँ बनी हुई हैं। जैसे कोई मोहम्मद के मानने वाला, कोई ईशु के मानने वाला, कोई नानक के मानने वाला और भी नाना प्रकार की मान्यताओं वाली रूढियाँ विद्यमान हैं। अरे राजन्! तेरा कर्त्तव्य है कि इन रूढ़ियों को समाप्त करने वाला बन। यदि तेरे राष्ट्र से ये रूढ़ि नहीं जाएगीं तो मानो देखो, राष्ट्र में रक्तभरी क्रान्ति आती रहेगीं और मानव, मानव का भक्षक बना रहेगा। तो ये विचार आता रहता है बेटा! देखो, वर्णम् ब्रह्मेः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने ऐसे कई काल में ये कहा है, क्या हे पुत्र! हे ब्रह्म! वर्णम् ब्रव्हे क्रतम् देवत्वाम् लोकाहम्''। मानो उन्होंने रक्तभरी क्रान्ति के लिए बहुत समय कहा था। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! तो महान् हैं। परन्तु इनकी विचित्रता मुझे स्मरण आती रहती है। मैं उस काल में जाना नहीं चाहता हूँ। केवल ये उच्चारण करने के लिए आया हूँ, अपने पूज्यपाद गुरुदेव को निर्णय देने के लिए, क्या यहाँ जो नाना प्रकार की ये रूढ़ियाँ पनप रही हैं अथवा रूढ़ियाँ उन्नत हो रही हैं। रूढ़ियों का अभिप्रायः ये है, क्या एक मानो देखो, राष्ट्र को नष्ट करना चाहती है। उसमें रक्तभरी क्रान्ति के अवशेषों का जन्म हो रहा है। राष्ट्र को चाहिए और समाज को चाहिए कि वह देखो अपने यहाँ रूढ़ि न पनपने दें। मानो देखो, रूढ़ि कैसे समाप्त होती है।

मुझे स्मरण आता रहता है, राजा रावण के काल में भी एक समय रूढ़ियों का, रूढ़ियाँ पनपी थी। मानो देखो, वह भी रूढ़ियों का वर्चस्व कहलाया जाता था। जहाँ नाना प्रकार के मत-मतान्तरों में मानव रक्त हो

जाता है। अरे! ये रूढ़ियाँ समाप्त होना बहुत अनिवार्य है। ये रूढ़ि कैसे समाप्त होंगी। मेरे प्यारे! देखो, मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में कहा। क्या राजा को चाहिए, क्या राजा प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को एकत्रित करता हुआ और उन रूढ़ियों में देखो आचार्यों से शास्त्रार्थ होना चाहिए। राजा ब्रह्मवेत्ता हो। राजा देखो वेद के मर्म को जानने वाला हो। ज्ञानवान हो और तपस्वी हो तो वह राजा मानो मध्य में विद्यमान हो करके और प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों से विचार-विनिमय होना चाहिए। और रूढ़ियों का शास्त्रार्थ होना चाहिए। विचार-विनिमय होना चाहिए। जो रूढ़ि ज्ञान और विवेक और देखो प्रकाश में रत्त हो जाए और विज्ञान में मानो देखो, उसकी स्थिति हो जाए। वही रूढ़ि श्रेष्ठ कहलाती है। वही धर्म कहलाता है। अरे राष्ट्रवेत्ताओं! तुम जो नाना प्रकार के धर्म उच्चारण करते हो, धर्म एक कहलाता है। नाना धर्म नहीं कहलाते। धर्मम् नम ब्रव्हे, देखो धर्म एक है। रूढ़ियाँ अनेक कहलाती हैं। अनेक रूढ़ियों को समाप्त करके मानव को धर्म के मर्म को जानना चाहिए।

धर्म

आओ देखो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने मुझे धर्म के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार दिए। और उन्होंने कहा, धर्म वह कहलाता है जो इन्द्रियों में समाहित रहता है। नेत्रों का धर्म देखो दृष्टिपात करना है, श्रोत्रों का धर्म शब्दों का ग्रहण करना है, त्वचा का धर्म प्रीति करना है और देखो घ्राण का धर्म मन्द सुगन्ध को ग्रहण करना है। और इसी प्रकार देखो वाणी का जो धर्म है वह रसों को स्वादन करना है। और इन्हीं में सर्वत्र धर्म मानो देखो, समाहित रहता है। ये उसका धर्म है। इसी धर्म को ले करके जब मानव अग्रणीय बनता है तो विचार करता हुआ दूरी चला जाता है। और धर्म को एकत्रित करता हुआ जब इन्द्रियों के विषय को समेट करके और वह हृदयरूपी यज्ञशाला में हवि करता रहता है उसी मानव के अन्तर्हृदय में विवेक की स्थापना हो जाती है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने कई काल में मुझे ये वर्णन करवाते हुए कहा था कि ये संसार एक भव्यों में उदय होता रहता है। आज का विज्ञान भी देखो मानव को त्रास दे रहा है। वैज्ञानिक सदैव ये आभा में रत्त हो रहा है। अध्युम् भूतम् ब्रह्माः याज्ञाः, देखो अपने में याग बना हुआ है। याज्ञिक बन करके जो मानव देखो हवि देता है वह पवित्र कहलाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने मुझे धर्म के सम्बन्ध में और देखो इन विचारों को देते हुए मैंने ये कहा, हे राजन्! यदि तू अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहता है, पवित्र बनाना चाहता है, शान्ति की स्थापना करना चाहता है तो तुझे देखो रूढ़ियों के ऊपर विचार-विनिमय करना होगा। और रूढ़ियों को समाप्त करना होगा। इसलिए देखो रूढ़ि जहाँ नहीं रहती, वही धर्म पनपता रहता है। वही क्रियाकलापों में महानता की और मानो विद्यमान रहती है।

यजमान और द्रव्य

आओ मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराते हुए कहा था ''सम्भूति ब्रह्माः''। मानो देखो, ये ब्रह्म की आभा में सदैव मानव को रत्त रहना चाहिए। और मेरा तो अन्तर्हृदय मानो यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। द्रव्य का दुरुपयोग मानव की मृत्यु है और द्रव्य का सदुपयोग करना ही देखो मानव का जीवन है, प्रकाश है। वही द्रव्य मानव को प्रकाश के मार्ग पर ले जाता है। इसीलिए मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये श्रवण किया द्रव्यों का सदुपयोग होना चाहिए। इसीलिए मैं कहता रहता हूँ हे यजमान! तेरे गृह में सदैव महानता का गमन होना चाहिए और द्रव्य का सदुपयोग हो। मानो देवताओं को हवि सदैव प्रदान की जाए। ऐसा देखो मेरा सदैव विचार रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे ऐसी मेरी कामना रहती है। आज का ये विचार हमारा सम्पन्न होने जा रहा है। आज के विचारों का अभिप्रायः ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती का गुणगान गाते हुए, अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे! ऋषिवर अभी-अभी महानन्द जी ने अपने बड़े भव्य विचार दिए। मानो इनके विचारों में कितनी सुगठिता है। क्या देखो धर्म होना बहुत अनिवार्य है। और धर्म की रक्षा होना, ये मानवीयता का कर्त्तव्य कहलाता है। और राष्ट्र का भी कर्त्तव्य है। राजा अपने धर्म और मानवीयता को अपनाता चला जाए। क्योंकि धर्म एकोकी वचन कहलाता है। जैसा महानन्द जी ने अभी-अभी कहा, क्या रूढ़ियों का नाम धर्म नहीं होता। धर्म वो होता है जो मानव के अन्तर्हृदय में समाहित रहता है। मानो उसी धर्म को अपनाना हमारा कर्त्तव्य है। तो ये आज का विचार क्या कह रहा है कि हम अपने में याज्ञिक बने और विचार-विनिमय करते चले जाएँ। परमपिता परमात्मा की महती को सदैव विचारते हुए इस सागर से पार हो जाएँ।

आज का विचार ये कि हम अपने देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, द्रव्य का सतोपयोग करते हुए, मातृशक्ति का पूजन करते हुए और देखो वह राष्ट्रवाद में प्रतिभा का जन्म और द्रव्य का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। ऐसा देखो मुझे महानन्द जी ने वर्णन कराया। आज का विचार अब ये समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाहा आभ्याम् रथहम् मनाः वाचन्नम् देवाः आपा गतम् मन्थाः वाचाः।
ओ३म् गन्धर्वाहम् मनुः वाचन्नम् ग्रहणाहम् त्वाहा।।
ओ३म् दधि ब्रह्म गायन्तवा यजन्नम् भद्रा वायाः।।

दिनाँक : 22 मार्च, 1990
स्थान : ग्राम मकनपुर,
गाजियाबाद

॥ ओ३म् ॥

आत्मतत्त्व

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी ये जड़-जगत अथवा चेतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं। क्योंकि चेतनामयी जगत और जड़वत् में ही मानो वे परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। जिसके ऊपर मानव परम्परागतों से ही प्रायः अन्वेषण करता रहा है और मानव उसके ऊपर विचार-विनिमय करता हुआ मानो उसके अनुभव "ब्रह्मणम् ब्रव्हा क्रतम देवां।" बहुत परम्परागतों से ही बेटा! ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके और वे परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर सदैव विचार-विनिमय करते रहे हें। क्योंकि हमारे यहाँ ये माना गया है कि जितना भी विज्ञान है इस संसार में, उस विज्ञान के मूल में परमपिता परमात्मा निहित रहते हैं। क्योंकि ये संसार अपने में परिवर्तनता में परणित होता रहा है। क्योंकि यहाँ प्रत्येक वस्तु का परिवर्तन होना है और होता रहता है। इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर विचार-विनिमय करते रहते हैं।

तपस्या का स्वरूप

हमारे यहाँ दो प्रकार के जगत के ऊपर ऋषि-मुनि बेटा! अपने में

तपस्वी बने। और तपस्या उसे कहते हैं जो मानव की इन्द्रियों का जो विषय है उस विषयों को अपने में धारण करने लगते हैं। और जब तक इन्द्रियों के विषयों को हम तपस्या और क्रियात्मकता में नहीं ला पाएँगे हम प्रायः तपस्वी नहीं कहलाते। तो इसीलिए आचार्यों ने कहा है कि तपस्या बहुत अनिवार्य है। एक मानव वेद के पठन-पाठन करने वाला है। वेद के मन्त्रों की वो झरी लगा रहा है, एक मानो माला बना लेता है। और उसकी माला बनाता हुआ अपने में ही मानो देखो, अपने में ही माला ग्राही बन जाती है। परन्तु यदि उस माला को हम धारण नहीं कर पाते हैं और माला का तारतम्य यदि ऊर्ध्वा को गमन नहीं करता है, तो मुनिवरों! देखो वह मानव का जो पठन-पाठन का कर्म है अथवा वेदज्ञ बनना है, वह उसका एक समय आता है कि वो व्यर्थ हो जाता है। इसीलिए प्रत्येक मानव को बेटा! देखो, उस आभा में परणित होना चाहिए।

मुझे स्मरण आता रहता है। एक समय बेटा! चाक्राणी गार्गी, जो अपने आचार्य के यहाँ से वेदों का उद्घोष करने लगी। और वेदों के मन्त्रों की मानो देखो, माला पाठ में जब गान गाती रहती, तो वेद का जो मन्त्र है, मानो वो प्रत्येक वेद का मन्त्र बेटा! अहिंसक है। उसमें मानो हिंसा नहीं है। वो अहिंसक कहलाता है। तो मुनिवरों! देखो, चाक्राणी गार्गी जब गान गाती रही, जब गान में उसकी प्रतिभा निहित रही। तो मेरे प्यारे! देखो, एकान्त स्थली पर विद्यमान है, और वो गान गा रही है। तो मेरे प्यारे! देखो, सर्पराज भी गान को श्रवण कर रहा है, मृगराज भी गान को श्रवण कर रहा है। वह जो स्वरों में ध्वनियाँ हो रही हैं उस ध्वनि को पान करने वाला बेटा! प्रत्येक प्राणी मात्र उस ध्वनि में ध्वनित हो जाता है। और वह अपने में ध्वनित होता हुआ अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात करने लगता है। तो मेरे प्यारे! जब चाक्राणी गार्गी, जब जटापाठ में गान गा रही थी। वेद मन्त्रों का उद्घोष हो रहा था। तो मुनिवरों! देखो, अमृताम् ब्रह्मणाः जब मृगराज मुनिवरों! अपने में ही गान को श्रवण कर रहा था, और सर्पराज भी श्रवण कर रहा है। ये हिंसक प्राणी कहलाते हैं। परन्तु **वेद नाम प्रकाश का** है।

जब प्रकाश में वो रत्त होने लगते हैं तो अन्धकार की आभा को त्याग करके वो भी प्रकाश की आभा में रत्त हो जाते हैं।

आध्यात्मिक विज्ञान

आओ मेरे प्यारे! देखो, वेद के एक मन्त्र की विचारधारा तुम्हें प्रगट कर रहा हूँ। वेद मन्त्र कहता है **''अहिंसमभवा प्रणम् व्रतम् देवत्वाम् लोकम् हिरण्यम् वृथा।''** जब मानव के उद्गार इस प्रकार के अहिंसक बन जाते हैं तो वेद मन्त्रों की जब ध्वनियाँ होने लगती हैं तो बेटा! उस ध्वनि को श्रवण करने वाले ऋषि-मुनि ही नहीं, मानो देखो, हिंसक प्राणी भी अपनी हिंसा को त्याग करके वह अहिंसक बन जाते हैं। और वह अहिंसक बन करके बेटा! देखो, उसमें अपने में ध्वनित होने लगते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! जब चाक्राणी गार्गी गान गा रही थी तो महर्षि सुमेता ऋषि महाराज, एक समय भ्रमण करते हुए बेटा! उस स्थली पर जा पहुँचे। और मुनिवरों! देखो वह क्या दृष्टिपात कर रहे हैं क्या सर्पराज है, मृगराज है और वह वेदों की ध्वनियों में ध्वनित हो रहे हैं। तो मुनिवरों! देखो ऋषि भी उनके मध्य में विद्यमान हो करके वह भी ध्वनि को श्रवण करने लगे। जो वेद की पवित्र ध्वनि होती है, उसका हृदय में समन्वय रहता है। क्योंकि जब हृदयग्राही बन जाते हैं तो हृदय का हृदय से समन्वय हो जाता है। और वही हृदय मेरे प्यारे! देखो, ''हृदयम् ब्रह्माः'' वही परमात्मा के हृदय से हृदयग्राही बन करके व अपने में अहिंसा की प्रवृत्ति में रत्त हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है। सुमेता ऋषि ने जब सायँकाल को उनकी वेदों की ध्वनि समाप्त हुई तो वह उनके चरणों की वन्दना करके बोले कि हे दिव्या! ये क्या है जो तुम इस प्रकार का गान गा रही हो। मानो तुम्हारे शब्दों की ध्वनि को मानो देखो, वह पक्षीगण क्या, सिंहराज क्या, सर्पराज क्या, ये सर्वत्र आपकी ध्वनि को श्रवण कर रहे हैं। तो मुनिवरों! देखो चाक्राणी गार्गी ने ये कहा, हे प्रभु! जब मानव का हृदय, परमात्मा के हृदय से समन्वय हो जाता है और वह तपश्चर बन जाता है। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने कहा कि ये हिंसक जो प्राणी है ये भी

अपनी हिंसा को त्याग करके और मुनिवरों! देखो अहिंसक बन जाते हैं। और अहिंसक बन करके मानव के हृदय में जो उद्गार हैं, वह जो वेदज्ञ ध्वनि है, जो परमात्मा की अनुपम वाणी है, अनुपम जो मानो देखो, कृतिका है उसे वो अपने में धारण करने लगते हैं। तो मेरे प्यारें देखो वेद मन्त्र कहता है कि **मानव को अहिंसक बनना चाहिए।** मानो देखो, हिंसा ही मानव का उपचार नहीं कहलाता। मानव की जो अहिंसा है वह मानवता का निर्माण करती है। और वही मुनिवरों! देखो विज्ञान की प्रतिभा में सदैव निहित रहती है। हमारे यहाँ विज्ञान के ऊपर विचार-विनिमय हो रहा था। वेद मन्त्र कह रहा था, **"विज्ञानाम् भूतम् ब्रह्मणोः व्रतम्"** मानो देखो, विज्ञान की चर्चा हो रही थी। हमारे यहाँ विज्ञान दो प्रकार का माना है। एक विज्ञान वह कहलाता है जिसको मैं बेटा! अभी-अभी तुम्हें वर्णन करा रहा था। आध्यात्मिक जो विज्ञान है ये मानव को मानवीयता में परणित करा देता है। इसीलिए आध्यात्मिक विज्ञान, हमारे यहाँ वह अहिंसा की प्रतिभा में मानव को प्रतिष्ठित कर देता है। और जो मानो देखो, भौतिक विज्ञान कहलाता है। और भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों बड़े विशिष्ट माने गए हैं।

हिंसा और अहिंसा

मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है। यहाँ जब मुनिवरों! देखो ऋषि-मुनि अपनी स्थलियों पर विद्यमान हो करके अपने में बेटा! जानने लगते हैं कि आध्यात्मिकवाद कितना विशिष्ट माना गया है। तो सुमेता ऋषि ने ये कहा कि हे दिव्या! मैं मानो देखो, उस अहिंसा वाले, उस अहिंसक को जानना चाहता हूँ। अहिंसा क्या है और हिंसा क्या है। उन्होंने कहा, हे भगवन्! जब मानव के हृदय में इस प्रकृति का आवेश आ जाता है और प्रकृति के आवेश में वो इतना रत्त हो जाता है, तो मानो देखो, उससे ऊब जाता है तो हिंसा करने लगता है। क्योंकि आत्मा की वाणी, आत्मा से जो उद्गारों का जन्म होता है उन उद्गारों को अपने में स्वीकार न करना ही हिंसा कहलाती है। वास्तव में जब ऋषि-मुनि, बेटा! देखो, हिंसा और अहिंसा की परिभाषा

करने लगते हैं अथवा उसमें रक्त होने लगते हैं तो वो कहते हैं। मेरे प्यारे! देखो, हिंसा और अहिंसा किसे कहते हैं। मुनिवरों! देखो हिंसा कहते हैं जो मानो अपनी अन्तरात्मा की वाणी, अन्तरात्मा की पुकार को अथवा उसके जो उद्गार हैं उन्हें वो जब दमन कर देता है संसार के आवेशों में, तो मुनिवरों! देखो उसे हिंसा कहते हैं। और जब आत्मतत्त्व के अनुसार, मानव अपने क्रियाकलापों को मानो वर्णित करता रहता है और उसी में रक्त हो जाता है। तो आत्मा के उद्गारों को ले करके मुनिवरों! जो संसार में गमन करता है वो अहिंसक कहलाता है। वहाँ हिंसा नहीं होती क्योंकि हिंसा का कारण आत्मा के उद्गारों को शान्त करना है। और देखो **अहिंसक बनना, ये आत्मा के उद्गारों को ऊर्ध्वा में गमन कराना है।** तो दो प्रकार से हम अपने में मानो देखो, हिंसक और अहिंसक बना करते हैं।

आओ मुनिवरों! देखो वेद का मन्त्र, एक-एक वेद का मन्त्र हमें बहुत ऊर्ध्वे उड़ान के लिए पुकारता रहता है। और ये कहता रहता है **"उद्गम् ब्रह्मणेः उद्गम् भवितम् ब्रह्मणाः उद्गाहा।"** हे मेरे प्यारे! ऋषिवर ये जो उद्गार हैं उद्गमता के, मानो देखो, ऊर्ध्वा के, ये मानो ज्ञान और ज्ञान के द्वारा विवेक और विवेक की मुनिवरों! देखो जब आत्मतत्त्व की प्रतिभा बन करके रहती है वही मानव को ऊर्ध्वागति वाला बना देता है। और विचित्र बना देता है।

महर्षि सुमेता और चाक्राणी गार्गी का महर्षि काग्भुषण्ड जी के आश्रम में प्रवेश

आओ मुनिवरों! देखो इस सम्बन्ध में विशेष नहीं, मुनिवरों! देखो चाक्राणी गार्गी और सुमेता ऋषि अपने में विचार-विनिमय करते हुए वह बोले कि हे दिव्या! मैं उसका निर्णय किस महापुरुष के द्वारा और जानना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, क्या चाक्राणी गार्गी और महर्षि सुमेता ऋषि महाराज मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से गमन करते हैं। और भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो जहाँ महर्षि काग्भुषण्ड जी अपने

अनुष्ठान में लगे हुए थे। उन्होंने बेटा! बारह वर्ष का एक अनुष्ठान किया था, क्या मैं मानो याग करूँगा। और उस याग के द्वारा मैं देखो इस याग के साकल्य को उसको जो हुत कर रहा हूँ, वह जो हुत हो रहा है उसे मैं मानो देखो, अन्तरिक्ष में जाता हुआ दृष्टिपात करूँगा। क्या उसमें कितनी महत्ता मानी जाती है। क्योंकि वेद का एक-एक मन्त्र कहता है **"हुताम् भवितम् ब्रह्मणेः क्रतम् द्यौ वर्णस्सुतम देवा ब्रह्मणेः विश्वस्ताम् ब्रह्माः।"** वेद का मन्त्र ये कहता है क्या जब मानो देखो, अनुष्ठान करने वाला याग करता है तो याग में मानो याग वो देखो द्यौ में प्रवेश हो जाता है। और द्यौ में उसकी स्थिति बन जाती है। वो स्थिर हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, इसी आभा में महर्षि काग्भुषण्ड जी लगे हुए थे। वे लोमश मुनि की आज्ञा पा करके मानो अपने में अनुष्ठान में लगे हुए थे। जिनके जीवन की प्रतिभा बेटा! बड़ी विचित्र मानी गयी है। महर्षि काग्भुषण्ड जी अपने में बड़े विचित्र आत्मा के आत्मतत्त्व को जानने वाले और उसके विश्वसनीय थे। मेरे प्यारे! देखो, माता के प्रिय पुत्र, माता ने ही बाल्यकाल में इस बाल्य का नामोकरण भी मुनिवरों! देखो कागा भूषण्डम् ब्रव्हे, देखो काग्भुषण्ड के नाम से वर्णन किया करती। माता क्यों कर रही थी। क्योंकि माता ये जानती थी कि ये बड़ा महान् इसका व्यक्तित्व है। और ये मेरे गर्भ से इसने जन्म लिया है। मानो देखो, ये मेरा महान् गर्भाशय बड़ा पवित्र रहा है। उस काल में तो माता ही क्योंकि निर्माण करने वाली है। माता ही मुनिवरों! देखो, गर्भस्थल से उसे हिंसा और अहिंसा की आभा में देखो उसको परणित कर देती है। तो मुनिवरों! देखो ये माता का नामोकरण किया हुआ देखो काग्भुषण्ड जी अपने में अनुष्ठान कर रहे थे। जब अनुष्ठान कर रहे थे तो बेटा! देखो, महर्षि सुमेता और मुनिवरों! देखो, चाक्राणी गार्गी भी भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो उनके आश्रम में जा पहुँचे।

महर्षि काग्भुषण्ड जी का अनुष्ठान

वे प्रातःकालीन मानो हुत कर रहे थे। भयङ्कर वनों से साकल्य लाना

और साकल्य के द्वारा मुनिवरों! देखो वह हुत करना, अग्नि में देखो अग्नम् ब्रह्माः क्रतम् व अपने हृदय की अग्नि और मुनिवरों! देखो बाह्य अग्नि दोनों का समन्वय करते रहते थे। व दोनों प्रकार की अग्नियों का जब समन्वय होता है तो बेटा! याग अपने में बड़ा सम्पन्नता को प्राप्त होता है। क्योंकि मानव का बाह्य जो अग्नि है और आन्तरिक जो अग्नि है, बेटा! देखो जो हृदय की अग्नि है। और जो बाह्य जो साकल्य मानो काष्ठ में वास करने वाली जो अग्नि है बेटा! वह भी बड़ी विचित्र है। जो अग्नि मेरे प्यारे! देखो, काष्ठ में रमण कर रही है। जो अग्नि साकल्य के रूप में रमण कर रही है। और जो अग्नि मुनिवरों! देखो मानव के हृदय की जो अग्नि है जिस अग्नि में बेटा! देखो ज्ञान का साकल्य बना करता है। जहाँ बेटा! देखो जहाँ इस ब्रह्माण्ड में जो ज्ञान प्रदीप्त हो रहा है, उसका साकल्य बना करके और वह जो उसमें हुत हो रहा है वही मुनिवरों! देखो, **आन्तरिक अग्नि** कहलाती है। और बाह्य अग्नि का और आन्तरिक अग्नि का जब समन्वय हो जाता है तो बेटा! याग अपने में सम्पन्नता को प्राप्त हो जाता है। ऐसा महर्षि, मुनिवरों! देखो महर्षि काग्भुषण्ड जी अपने में वर्णन करते रहते थे।

मेरे प्यारे! देखो, जब उन्होंने वर्णन किया। मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! वो याग कर रहे थे। परन्तु दोनों अपने में जिज्ञासु बन करके इस यज्ञशाला में विद्यमान थे। अगला जो दिवस हुआ। उस दिवस में मुनिवरों! देखो, एक वृत्तिका मुनि महाराज, मेरे प्यारे! अपने विद्यालय में ब्रह्मचारियों को दण्डित करके और वह वृत्तिका मुनि, मुनिवरों! देखो भ्रमण करते हुए, वे काग्भुषण्ड जी जैसे याग कर रहे थे, तो उन्होंने बिना आज्ञा के मेरे पुत्रों! देखो, याग में साकल्य देना प्रारम्भ कर दिया। अग्नि के समीप विद्यमान हो गए। और वह जो स्वाहा उच्चारण करने लगे तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि काग्भुषण्ड जी ने जब दृष्टिपात किया अपने योगाभ्यास के द्वारा अपने आत्मतत्त्व के द्वारा, तो आत्मा ने स्वीकार नहीं किया। उसी के अनुसार बेटा! वह विचार-विनिमय करने लगे। जब विचार-विनिमय करने लगे तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, हे ऋषिवर! आप जो हुत कर रहे हैं वह आहुति मानो तमोगुण

से सनी हुई आहुति है जो अन्तरिक्ष में गमन कर रही है। और मेरा याग तुमने मानो देखो मध्य में शान्त कर दिया है। मेरा अनुष्ठान पूर्णता को प्राप्त नहीं हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, वह ऋषि ने कहा प्रभु! वास्तव में मेरा हृदय तमोगुणी में परणित हो रहा है। क्योंकि मैं अपने विद्यालय से पधार रहा हूँ। और मैंने ब्रह्मचारियों को मानो दण्डित किया है। और ''ब्रह्मचरिष्याममम् ब्रह्माः लोकम् वर्णम् ब्रह्मेः क्रतम्'' हे प्रभु! मैं वास्तव में देखो मैं उन्हें तमोगुणी की प्रतिभा और मैं दण्डित करके मैं आपके आश्रम में पधारा हूँ। हे प्रभु! मैं याग करने लगा हूँ। मेरे अन्तर्हृदय की जो भावना है, अन्तर्हृदय की जो तरङ्गें हैं, वह तरङ्गें मानो देखो अन्तरिक्ष में प्रवेश कर रही हैं। वह द्यौ में प्रवेश कर रही हैं और वो द्यौ वाला जो अप्रतम कहलाता है, वो एक महान् और विचित्रता में रमण कर रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया। तो काग्भुषण्ड जी की कितनी ऊर्ध्वा में साधना थी। वह साधना में साधन् ब्रह्मेः व्रतम् वह साधना करते-करते बेटा! कितने ऊर्ध्वा गमन कर गए हैं। क्या वह मुनिवरों! देखो, अन्तरिक्ष में जो स्वाहा जा रहा है, द्यौ में प्रवेश हो रहा है। अपनी आत्मा के साथ मुनिवरों! देखो, मनस्तत्त्व और प्राण दोनों का समन्वय करते हुए आत्म देखो जो विचार आता है तो मेरे प्यारे! देखो, वह प्राण के माध्यम से उनके चित्र, उनकी प्रतिभा उनके अन्तर्हृदयों में बेटा! देखो दृष्टिपात होने लगते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, ये अनुष्ठान अपने में कितने विचित्रत्व में माने गए हैं।

विचार आता रहता है बेटा! काग्भुषण्ड जी ने ये कहा कि हे भगवन्! मैं अब याग नहीं करूँगा। हे प्रभु! मेरा याग देखो सतोगुण को प्राप्त होना था। और मैं सतोगुण भी नहीं चाहता। मैं इस अनुष्ठान को अपने मोक्ष के लिए, अपने आनन्द के लिए मानो देखो मैं अपने में आनन्दित होना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि वृत्तिका मुनि ने कहा, प्रभु! आप शान्त कर दीजिए। मेरे प्यारे! देखो वो अपने में योगाभ्यास में लग गए और वह गायत्री माँ की गोद में जा पहुँचे। और गायत्री छन्दों का जब पठन-पाठन करने लगे, वेद का अध्ययन करने लगे। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने बारह दिवस

तक उन्होंने वेद का अध्ययन किया। और अपने में तपस्वी बन, अन्न का पान नहीं किया। जब अन्न का पान नहीं किया, वो जल का सेवन करते रहे। तो बेटा! देखो जो उसके पश्चात् व उसका देखो अनुष्ठान पूर्णता को प्राप्त हुआ।

आज मैं बेटा! तुम्हें ऋषि-मुनियों के ऐसे क्षेत्र में ले जा रहा हूँ। जहाँ ऋषि-मुनि बेटा! देखो, अपने अनुसन्धान में लगे रहते थे। अपनी विचारधारा उनकी कितनी विचित्रता में गमन करती रही है। तो मेरे प्यारे! देखो, काग्भुषण्ड जी अपने में महान् तपस्वी और महान् कहलाते थे। जिनके जीवन में बेटा! कोई त्रुटि नहीं थी। जिनके जीवन में केवल एक साधना का ही प्रसङ्ग बना रहता था। और वह वायुमण्डल में गमन करते रहते थे। आत्मा के अनुसार अपने जीवन को बरतते रहते थे।

महर्षि सुमेता काग्भुषण्ड जी के प्रश्नोत्तर

मुनिवरों! देखो, जब ऋषि विचारधारा को और वृत्तियों को, मेरे प्यारे! देखो, माता चाक्राणी गार्गी ने और महर्षि सुमेता ऋषि ने इसको दृष्टिपात किया। और उनके विचारों को श्रवण किया। तो महर्षि सुमेता ऋषि महाराज ने इसको दृष्टिपात किया। और उनके विचारों को श्रवण किया। तो महर्षि सुमेता ऋषि महाराज, बेटा! अपने में आश्चर्यचकित हो गए। और उन्होंने कहा, हे दिव्या! ये ऋषि तो बड़ा विचित्र है। मानो इसके क्रियाकलाप भी बड़े विचित्र माने गए हैं।

आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद

मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से उन्होंने ये दृष्टिपात करते हुए ऋषि से एक प्रश्न किया। क्या हे भगवन्, हमें आपके आश्रम में देखो पन्द्रह दिवस हो गए हैं। और पन्द्रह सिवस से आपके क्रियाकालपों का हम अपने में चयन कर रहे हैं प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं कि आध्यात्मिक और भौतिकवाद किसे कहते हैं? मेरे पुत्रों! देखो, काग्भुषण्ड जी ने कहा, क्या देखो

आध्यात्मिक और भौतिकवाद को तुम जानना चाहते हो तो तुम अपनी अन्तरात्मा से ही प्रश्न करो। तुम्हारा अन्तरात्मा ही तुम्हें उत्तर दे सकेगा। उन्होंने कहा, प्रभु! हम आपसे, अन्तर्हृदय से ही जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा तो मेरे विचार में तो ये है, क्या आध्यात्मिकवाद उसे कहते हैं जो मानो अपने मन, वचन और कर्म को मानो एकोकीकरण में लगा देता है। और वह आत्मा की जो पुकार है, आत्मतत्त्व की जो ध्वनि है, वो जब आती रहती है और उसी के अनुसार हम बरतने लगते हैं, क्रियाकलापों में रत्त हो जाते हैं तो मानो देखो उसी को हमारे यहाँ आध्यात्मिकवाद कहा जाता है। और भौतिकवाद उसे कहते हैं जहाँ भौतिकवाद में मानव प्रकृति के समक्ष चला जाता है। और प्रकृति के द्वारा जो मनस्तत्त्व की प्रतिभा है और प्राणों की प्रतिभा है। जब दोनों का विभाजन हो जाता है और दोनों को एक सूत्र में लाने का भी प्रयास करता है। परन्तु उसके पश्चात् भी वो आत्मा की वाणी और ध्वनि को अपने में स्वीकार नहीं कर रहा है। तो उसका नाम भौतिक विज्ञान कहलाता है। वह भौतिकवाद कहलाता है। और भौतिकवाद और आध्यात्मिकवाद का दोनों का समन्वय होना ही मानो देखो उसे आध्यात्मिक आत्मा का एक महान् विषय माना गया है। वो आत्मा का विषय है उसे हमें जानना चाहिए।

हृदय

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन कराया तो ऋषि ने अमृताम् ब्रह्मणेः, मेरे प्यारे! देखो काग्भुषण्ड जी से एक वाक्य उन्होंने कहा। एक प्रश्न किया कि महाराज, हृदय क्या है? हम हृदय को जानना चाहते हैं। उन्होंने कहा, हृदय दो प्रकार का देखो **दो हृदय माने गए** हैं। एक हृदय मानव के समीप रहता है, जिसको हम देखो **विशेष हृदय** कहते हैं। और एक **विश्वभान हृदय** होता है। विश्वभान हृदय उसे कहा जाता है जो परमात्मा का ये जो जगत है और जगत में जो तरङ्गवाद है और ये जो जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। ये परमात्मा के सन्निधान मात्र से गमन कर

रहा है। और **परमात्मा का हृदय, ये ब्रह्माण्ड माना गया है।** और जब दोनों हृदयों का समन्वय हो जाता है तो वह हृदय मानो देखो हृदय से हृदय में समन्वय हो करके वह हृदय मानो देखो मोक्ष की पगडण्डी कहा जाता है।

विद्या का स्रोत

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया, संक्षिप्त में उन्होंने देखो इसका उत्तर दिया। तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए। सुमेता ने कहा, धन्य है प्रभु! आपको जैसा हम दृष्टिपात, श्रवण करते रहे हैं, प्रायः आपका हृदय उसी प्रकार का है। हम भगवन् एक और जानना चाहते हैं, क्या ये विद्या तुम्हें कहाँ से प्राप्त हुई है? तुम जो इस प्रकार के अनुष्ठान करते रहते हो और वह वैज्ञानिकता में परणित हो रहे हैं। तुम चित्रों को दृष्टिपात करते हो, ये तुम्हें कहाँ से प्राप्त हो रहा है? तो मुनिवरों! देखो, महर्षि काग्भुषण्ड जी ने कहा, क्या ये मेरे संस्कार बने हुए हैं। मेरी जो माता थी मानो उसका नाम **शकुन्तला** था। और वह मेरी प्यारी माता ने मुझे अपने गर्भस्थल में मेरा निर्माण किया। लोरियों का पान कराती रहती। परन्तु देखो उसी ने मुझे तपस्या के संस्कार दिए। और उसी की आभा में सदैव रमण करता रहता हूँ। जहाँ मैं माता के गर्भ से मैं पृथक् हो गया हूँ। मानो देखो इसी प्रकार मैं परमपिता परमात्मा के गर्भस्थल में विद्यमान हो करके भी मैं उसी प्रकार के विचारों का मैं श्रवण करता रहता हूँ। और वह जो तरङ्गें उनके श्वास में जो तरङ्गवाद उत्पन्न होता रहता है मैं उन तरङ्गों को अपने में देखो ध्वनि बना करके उसे श्रवण करता रहता हूँ। शान्त मुद्रा में विद्यमान हो करके जैसा वेद का मन्त्र कहता है। और वैदिक मन्त्र के आधार पर मैं उसके ऊपर अनुसन्धान करता रहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, काग्भुषण्ड जी ने जब ऐसा कहा तो उनका हृदय गद्गद् हो गया। उन्होंने कहा, धन्य है प्रभु! तो मेरे प्यारे! देखो, चाक्राणी गार्गी भी देखो उसी धारा के जानने वाली थी। और सुमेता भी उसी धारा में लगे हुए थे कि मैं इसी प्रकार मुझे आत्मतत्त्व का ज्ञान हो जाए। और आत्मतत्त्व तभी हम प्राप्त कर सकते हैं जब हम बाह्य

जगत को आन्तरिक जगत में और आन्तरिक जगत को बाह्य जगत में जब देखो परणित हो जाते हैं। एकोकीकरण कर देते हैं। तो मानो देखो हमारा आत्मतत्त्व "आत्मम् ब्रव्हे" आत्मभाव हमें उत्पन्न हो जाते हैं।

आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद में अन्तर्द्वन्द

मेरे प्यारे! देखो उनका दोनों का विचार-विनिमय होता रहा। आध्यात्मिकवाद अपने में बड़ा विशिष्ट है। वेद का ऋषि कहता है, क्या भगवन्! देखो, आध्यात्मिकवाद और भौतिकवाद में दोनों में अन्तर्द्वन्द्व क्या है? तो मुनिवरों! देखो, काग्भुषण्ड जी ने कहा कि हे प्रभु! एक समय मैं जब विद्यालय में अध्ययन करता था तो मैं मेरे आचार्य और हम दोनों भ्रमण करते हुए एक समय मगध राष्ट्र में जा पहुँचे। और मगध राष्ट्र में एक कात्यायन के गृह में हमारा, हमारा वास हुआ। और कात्यायन की पत्नी ने ये मेरे पूज्यपाद गुरुदेव के लिए प्रश्न किया था। क्या हे भगवन्! आध्यात्मिक और भौतिकवाद में क्या अन्तर्द्वन्द्व है। मानो देखो उसका उत्तर जब आचार्य ने दिया। तो उन्होंने ये प्रश्न किया कि महाराज! आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों का समन्वय कैसे हो सकता है? तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने ये कहा कि आध्यात्मिक और भौतिकवाद में, क्या दोनों में अन्तर्द्वन्द्व क्या है, तो और वो क्या चाहता है। भौतिक विज्ञानवेत्ता के हृदय में क्या है और आध्यात्मिकवेत्ता क्या चाहता है। तो कात्यायन की पत्नी ने जब ये प्रश्न किया तो उस समय मेरे आचार्य ने ये कहा, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ने ये कहा कि एक तो मृत्यु को चाहता है और एक मृत्यु से उपरामता को चाहता है। क्योंकि आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता तो ये चाहता है, क्या मैं मृत्यु से दूरी हो जाऊँ। जैसे वेद का एक-एक मन्त्र प्रकाश से परिपूर्ण है, उसी प्रकाश को मैं चाहता रहता हूँ। और उस प्रकाश के लिए मानो मैं सदैव रत्त रहता हूँ। उसी से मैं आत्मा के भाव को अपने में स्वीकार करता रहता हूँ। आत्मा की आज्ञा का पालन करता हूँ। मानो देखो उसे हम आध्यात्मिकवाद कहते हैं। और वो ज्ञान लेता है आत्मा के भावों से, क्या ये

जो परमाणुवाद है। जिस परमाणुवाद से मेरे शरीर का निर्माण हुआ है। वह मानो देखो ''शरीराम् भवतम् ब्रह्मणाः परिवर्त सुताः'' वेद का वाक्य कहता है, क्या एक समय इसका परिवर्तन होना है। और ये मानो देखो, मृत्यु कोई वस्तु नहीं है संसार में, आध्यात्मिकवेत्ता ये निर्णय कर लेता है, क्या मृत्यु कुछ वस्तु नहीं है। मानो देखो इसका रूपान्तर हो जाना है, परिवर्तित हो जाना है। और ये परिवर्तित क्या है, मानो देखो जब ''ब्रह्माः क्रतम्'' ये परमाणुओं का समूह कहलाता है। और जब परमाणुओं का परिवर्तित हो जाता है तो मानो देखो मृत्यु उसके समीप नहीं रहती है। इसी प्रकार अब भौतिक विज्ञानवेत्ता क्या चाहता है। मेरे प्यारे! वो प्रत्येक स्थली में इस वाक्य पर लगा हुआ है, इस क्रियाकलाप को चाहता है कि मैं अमुक स्थान पर जाऊँगा तो मेरी मृत्यु हो जाएगी। मानो मैं परमाणु का जब मिलान करूँगा तो मेरी मृत्यु न हो जाए। ऐसे परमाणुवाद में रत्त हो जाता है। वह मानो देखो अन्तरिक्ष में उड़ानें उड़ने लगता है। कही प्रकृति के आवेशों से नाना प्रकार के परमाणुओं का विभाजन करता रहता है, इसमें ब्रह्माण्ड दृष्टिपात आता है। और वो ये चाहता है कि मेरा नामोकरण ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाए।

मेरे पुत्रों! देखो, जितना वो ऊर्ध्वा में नामोकरण चाहता है। मानो द्रव्यों को एकत्रित करने वाला, द्रव्यपति बनना चाहता है। और वह अपने नाना कर्म को देखो ऊर्ध्वा में ले जाना चाहता है। मुझे द्रव्यपति की एक उपाधि प्राप्त हो जाए। मेरे प्यारे! परमाणुवाद को जानने वाला परमाणुवाद में अपनी उपाधि चाहता है। इसी प्रकार देखो वो भौतिक विज्ञानवेत्ता भौतिक तपस्वी बनता हुआ राजा बन जाए। वह भी अपने राष्ट्र के लिए मुनिवरों! देखो अपने में कल्पना कर रहा है।

विचार आता रहता है वो पृथ्वी के गर्भ में चला जाता है। पृथ्वी के गर्भ में जो नाना प्रकार का खनिज है अथवा खाद्यान्न है, उस विज्ञान में रत्त हो जाता है। तो वो भी ये चाहता है मेरा नामोकरण हो। मेरे प्यारे! देखो

एक ऋषि, एक देखो विज्ञानवेत्ता ऋषि के समीप जाता है। और वो ऋषि से मुनिवरों! देखो, अपने यन्त्रों का निर्माण करता हुआ और वह लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने लगता है, तो बेटा! वो भी नामोकरण चाहता है। और जितना वो नामोकरण चाहता है उतना ही बेटा! उसे अभिमान आता है। और अभिमान के गृह में मृत्यु विद्यमान रहती है। अज्ञान विद्यमान रहता है। और जितना आध्यात्मिकवेत्ता होता है वो नम्रता के क्षेत्र में चला जाता है। वो नम्र बन जाता है। और वो अपने हृदय में ये विचारता है कि परमात्मा का हृदय तो बड़ा विशाल है। और मेरे हृदय का मिलान यदि परमपिता परमात्मा से हो जाए तो मानो देखो मैं आत्मवेत्ता बन जाऊँ। मेरे में अभिमान न आ जाए। वही मेरी मृत्यु का कारण बनेगी। इसीलिए प्रत्येक परमाणु मेरे प्यारे! देखो अपने-अपने रूप में परिवर्तित होता रहता है। तो वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है क्या मुनिवरों! देखो वह तो यह चाहता है, प्रकाश में रत्त होना चाहता है। और वो अपने नामोकरण के पश्चात् वो अपने को मुनिवरों! देखो मृत्यु के समीप जाना चाह रहा है। वो अभिमान में परणित हो रहा है। और वो नम्रता में, वह परमात्मा क्योंकि नम्र है, परमात्मा अकाय, मानो काया नहीं है तो अकाय है। इसीलिए अकाय की वो कल्पना कर रहा है।

मेरे प्यारे! देखों जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन कराया तो ऋषि मेरे प्यारे! देखो अपने में शान्त हो गए। और उन्होंने कहा कि ये हमारा कितना सौभाग्य है। तो मुनिवरों! देखो महर्षि कात्यायनम् देखो काग्भुषण्ड जी ने कहा, मेरे जो आचार्य हैं, आचार्य ने मुझे ये दोनों उत्तर देखो कात्यायन के गृह में उनकी पत्नी को दिए। तो कात्यायन की पत्नी ने उनके चरणों की वन्दना की। और उन्होंने कहा, धन्य है।

मुनिवरों! देखो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता मृत्यु से पार हो जाता है। और भौतिक विज्ञानवेत्ता बेटा! देखो एक परमाणु को जानता है, दूसरे परमाणु में रत्त हो जाता है। एक तरङ्ग के जाने पर दूसरे तरङ्ग में तरङ्गित हो

गया है। मेरे प्यारे! देखो उस तरङ्ग को, उन तरङ्गों के विज्ञान को वो जान नहीं पाता। इतने में शरीर का विच्छेद हो जाता है। मेरे प्यारे! पुनः वही आ जाता है। पुनः विचारता रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो वो नामोकरण में लगा हुआ है। और वो मुनिवरों! देखो अपने में शान्त करता हुआ, शान्त जगत में चला जाता है। क्योंकि परमपिता परमात्मा का जो जगत है, वो शान्त है। और शान्त जगत में जो अपनी सान्त्वना को प्राप्त हो जाता है बेटा! वो महान् बन जाता है।

आओ मेरे प्यारे! देखो मैं आज तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ। विचार केवल संक्षिप्त परिचय दूँगा। मेरे प्यारे! देखो ये परिचय देना ही है। साधना में जाना नहीं है। मानो देखो ये परिचय क्या है मेरे पुत्रों! कि ऋषि-मुनियों की अपनी बड़ी विचित्र धारा रही है। चिन्तन और मनन करने का बड़ा उनका एक मानो नृत बना रहा है। जिसके ऊपर वो अपने में ध्यानावस्थित हो करके बेटा! अपनी उपरामता को प्राप्त होते रहे हैं। तो आओ मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार क्या, ये गम्भीर विषय हैं। इन गम्भीरताओं में बेटा! देखो अपने को ले जाना, ये हमारा कर्त्तव्य है। आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता को जानते हुए और परमपिता परमात्मा के जड़ और चेतन्य जगत को जानते हुए बेटा! इस संसार सागर से हमें पार हो जाना चाहिए।

आओ मेरे प्यारे! देखो आज का हमारा वेद मन्त्र, हमें क्या कह रहा है। बेटा! देखो, मानव को अहिंसक बनना चाहिए। मानव को अपनी आत्मा की मानो पुकार को स्वीकार करते हुए अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, वेद का एक-एक मन्त्र हमें बहुत ऊर्ध्वा के लिए गमन करा रहा है। **हमें वेद मन्त्रों के ऊपर अपने जीवन को ले जाना चाहिए।** जिससे बेटा! हमारा जीवन एक महानता में परणित होता हुआ और इस संसार सागर से पार हो जाएँ। आओ मेरे प्यारे! आज

का हमारा ये विचार क्या कह रहा है। महर्षि काग्भुषण्ड जी ने अपना मन्तव्य देखो ऋषि को प्रगट कराया। तो सुमेता ऋषि महाराज और चाक्राणी गार्गी को बेटा! अपना जो आन्तरिक मन्तव्य है, उसको देते हुए अपने में शान्त हो गए। और वे दोनों शान्त हो करके चरणों की वन्दना करते हुए, उन्होंने अपने आसन को त्याग दिया।

ये है बेटा! आज का वाक्। **आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः** ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, हमें बेटा! इस संसार सागर से पार होना चाहिए। क्योंकि हम **संसार में, हमारे आने का मन्तव्य ये है कि अपने को शान्त आत्मा में प्रवेश हो जाएँ।** और मुनिवरों! देखो, संसार के नाना प्रकार के क्रियाकलापों को करते हुए अपनी मानवीयता को ऊँचा बनाए। ये है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा, मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक्य अब ये सम्पन्न होने जा रहा है। समय मिलेगा तो बेटा! शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् रथम् मनाः वाचन्नमः।
ओ३म् भद्राणीताः माम् रथप् प्राणः वायाः।
ओ३म् रथश्चन्नमः रेवम् गताः वायाः।

दिनाँक : 25 मार्च, 1990
स्थान : मोदीनगर, गाजियाबाद

॥ ओ३म् ॥

माँ दुर्गा

मुनिवरों! आज हमें अपना कल्याण करना है और विचारना है कि कल्याण के लिए सबसे मुख्य वार्ता क्या है? मेरे प्यारे महानन्द जी ने निर्णय कराया कि इस समय संसार में प्रत्येक स्थान में माँ दुर्गा का पूजन हो रहा है। माँ दुर्गा क्या है? माँ दुर्गा भी वह सन्ध्या है।

माँ दुर्गा तू वास्तव में कल्याण करने वाली है। आज के वेद-पाठ में कई स्थानों में माँ दुर्गा का प्रकरण आ रहा था। हे माता दुर्गे! तुझे अष्ट भुजाओं वाली कहा जाता है। तू वास्तव में अष्ट भुजाओं वाली है। जब तू आठ भुजाओं को लेकर संसार में आती है तो यह संसार प्रकाशमान हो जाता है। सिंह तेरा वाहन है। तू सिंह रूपी वाहन पर सवार होकर आ, और आ करके दैत्यों को शान्त कर और देवताओं की रक्षा कर। माता दुर्गे! तू वास्तव में कल्याण करने वाली है। तू वास्तव में हमारे जीवन को, हमारे हृदय को उदार बनाने वाली है। मल विक्षेप आवरण को शान्त करने वाली है और आत्मा को निर्मल और स्वच्छ बना देती है।

मुनिवरों! देखो, अष्ट भुजाओं वाली दुर्गा कौन है? जिसके अष्ट भुजाएँ हैं। दुर्गा नाम है बेटा विद्या का।

मुनिवरों! देखो, विद्या किसी के आधार पर आती है। विद्या का जो वाहन है वह भी विचित्र है। वह कौन है? वह देखो सिंहनाद है जिसके आधार से विद्या आती है। यह अष्ट भुजाओं वाली विद्या, अष्ट भुजाओं वाली दुर्गा कौन है?

मुनिवरों! देखो, जब मनुष्य ज्ञान के मार्ग में जाता है तो विद्या को पान करने वाला बन जाता है। उस समय यह दुर्गा, यह विद्या इस सब ब्रह्माण्ड का जिसमें आठ दिशायें हैं उनका ज्ञान करा देती है। उसके ज्ञान और विज्ञान को जान जाता है कि पूर्व में क्या है? पश्चिम में क्या है? उत्तरायण में क्या है? दक्षिणायन में क्या है? उन दोनों के माध्यम में क्या है। आठों दिशाओं को जानने वाला जिज्ञासु मुनिवरों! देखो, दुर्गा का अनुकरण करता है।

दुर्गा माता की पूजा कैसे की जाती है?

दुर्गा माता की पूजा मनुष्य उस काल में कर सकता है जब उसके द्वारा ज्ञान होता है, विद्या होती है, सिंहनाद होता है। सिंहनाद कौन-सा है?

मुनिवरों! देखो, जिससे अपराधियों को कुचला जाता है। अज्ञान रूपी पशुओं को शान्त किया जाता है। हृदय निर्मल और स्वच्छ बन जाता है। तो मुनिवरों! माँ दुर्गे भी सन्ध्या है।

मेरे प्यारे महानन्द जी! ने मुझे एक वार्ता प्रकट की कि गङ्गा में एक प्रवाह आता है और उस पर्व में जो गङ्गा की अमृतधारा को पान करता है वह वास्तव में अमर हो जाता है। वह निर्मल और स्वच्छ बन जाता है। वह देवता बन जाता है। वह उस गङ्गा की दुग्ध तुल्य धारा को पान करके संसार से पार हो जाता है।

वह कौन से पर्व का स्थान है जिसके करने से मानव का कल्याण होता है। जिस पर्व में स्नान करने से आत्मा के मल विक्षेप आवरण शान्त हो जाते है। वह कौन-सा निर्मल स्वच्छ जल है?

मुनिवरों! आज हम विचारते नहीं। प्रातःकाल के पर्व में हमारा हृदय निर्मल और स्वच्छ कैसे बन सकता है? प्रातःकाल की गङ्गा में स्नान से बन सकता है। माता दुर्गा (विद्या) की पूजा से बन सकता है। आज उस सन्ध्या के अनुसरण करने से बन सकता है।

गङ्गा की कौन-सी धारा है जिसे पर्व कहते हैं। मेरे महानन्द जी ने कहा कि पूर्णिमा का एक अलौकिक समय आता है जिस समय गङ्गा में एक महत्ता आती है। जिस पर्व के स्नान से मानव निर्मल बन जाता है।

मुनिवरों! वह गङ्गा हमारे शरीर में रमण करती चली जा रही है। वह वेग से बहती चली जा रही है। मुनिवरों! वह है हमारी सन्ध्या। जिसमें ज्ञान का प्रकरण आता है और जिसके स्नान से हमारा हृदय निर्मल और स्वच्छ बन जाता है। मुनिवरों! जो प्रातःकाल में सन्ध्या का अनुकरण करते हैं और एकान्त स्थान में विराजमान हो करके सन्ध्या का पान करते हैं और सन्ध्या में कहते हैं,

'प्रातरग्नि' ! मुनिवरों! जब **'प्रातरग्नि'** का पाठ आता है तो कहते हैं हे विधाता! हमारी रक्षा करो। आज अपनी रक्षा चाहते हैं। यह जीवन आपका है। यह शरीर आपका है। यह संसार आपका है। मुनिवरों! मनुष्य सब ही कुछ देखो परमात्मा के अर्पण कर देता है। उस समय मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ हो जाता है। आत्मा के द्वारा जो मल विक्षेप आवरण हमारे पाप कर्मों द्वारा, दुष्ट कर्मों द्वारा आ जाते हैं वह उस प्रकाश से सब शान्त हो जाते हैं।

मुनिवरों! जैसे एक वस्त्र है और उसमें बड़े ही दोष हैं। परन्तु जब वह जल के समीप जाता है तो जल उसे निर्मल और स्वच्छ बना देता है। इसी प्रकार हमें भी अपनी आत्मा के द्वारा जो मल विक्षेप आवरण हैं उनको शान्त करने के लिए हमें सबसे पूर्व माता सन्ध्या का पूजन करना है। उसके पाठ को करना है। **''ऋतञ्च, सत्यञ्च''** का पाठ करना है जिससे वास्तविक कल्याण हो जाएगा।

आज सबसे पूर्व अपने को बनाना है। मैंने आज से पूर्व काल में कहा था कि देखो जब मनुष्य **'शन्नो देवी'** का पाठ करता है तो कहता है 'हे देवी तू कल्याण करने वाली है। तू हमारे कण्ठ में आ समा। जैसे जल हमारी तृषा को शान्तकर देता है उसी तरह हमारा कण्ठ उस जल रूपी तृषा का इच्छुक न रहे। हे शन्नो! हमारा कण्ठ तो उस आनन्द का इच्छुक है। जैसे जल शीतल बना देता है उसी प्रकार हे शन्नो! तू आ और हमारे कण्ठ में विराजमान हो। हे माता! हमारा कण्ठ मधुर बने। सुन्दर बने। जिससे हे माता! हमारे कण्ठ में जो वार्त्ता होगी यथार्थ होगी। अन्तःकरण तक जाएगी। हमारे द्वारा जो विक्षेप आवरण है, हे ''शन्नो देवी तेरे से शान्त हो जाएँगे। जैसे जल से तृषा शान्त हो जाती है उसी प्रकार ज्ञान से हमारे मल विक्षेप आवरण शान्त हो जाएँगे। जब ज्ञान का प्रकाश हो जाएगा तो अंधकार कहाँ रहेगा। जैसे रात्रि को शान्त करने वाला सूर्य प्रातःकाल में आता है और रात्रि का नाश कर देता है इसी प्रकार, हे शन्नो देवी! तू वाणी में विराजमान हो जाएगी और वाणी का प्रभाव अन्तःकरण तक जाने के पश्चात् मल विक्षेप आवरण जो हमारे पापों से बन चुके हैं वह सब शान्तहो जाएँगे। हे माता! हम तुझसे अनुरोध करते चले जा रहे हैं। संध्या में सबसे पूर्व मुनिवरो। अपने को बनाना है।

अहा! सन्ध्या की तीन व्याहृतियाँ होती हैं। एक मुनिवरों! देखो, अपने को बनाना है कि मैं कौन हूँ और मैं कैसे बनूँ। मेरा हृदय कैसा बने, मेरे चक्षुः, मेरे श्रोत्र, मेरी घ्राण कैसी बने? मेरी त्वचा यह सब ही कुछ कैसे बने। अपने को परमात्मा के समर्पण कर दो। प्रत्येक इन्द्रिय के विषय को जानो। पहली व्याहृति यह है। द्वितीय व्याहृति वह है कि हम परमात्मा की सृष्टि का प्रकरण लेते हैं। हम परमात्मा का गुणगान गान गाते हैं। हे परमात्मा! अब हम आपके पात्र हुए हैं। मैंने आज से पूर्व काल में कहा है कि परमात्मा के गुणगान गाने के लिए तुम पात्र बनो। जैसे मैंने यज्ञोपवीत के सम्बन्ध में भी कहा था कि यज्ञोपवीत लेने से पूर्व तुम पात्र बनो। उसके पश्चात् तुम किसी की याचना कर सकोगे।

आज मुनिवरों! जैसे किसी द्रव्यपति के द्वारा कोई सेवक है और किसी काल में अपने स्वामी से कहता है कि मेरा जो वेतन है वह मुझे दो। मुनिवरों! वह वेतन किस काल में प्राप्त करता है? वह उसी काल में करता है जब वह पात्र बनता है। इसी प्रकार मुनिवरों! हमें सबसे पूर्व अपने को बनाना है और अपने को जानना है। जब हम अपने को जान जाएँगे तो उसके पश्चात् हम परमात्मा के गुण गाने योग्य होंगे, प्रभु का गुणगान गाएँगे। एक समय वह आएगा कि प्रभु हमारा रक्षक बन जाएगा। मुनिवरों! जब प्रभु हमारा रक्षक बन जाता है तो उस काल में वह हिंसक प्राणियों से जो हमें कष्ट देने वाले हैं उनसे हमारी रक्षा करता है, उन्हें कुचल देता है और हर प्रकार से हमारी रक्षा करता है। तो मुनिवरों! आज सबसे पूर्व हमें पात्र बनना है और सब कुछ परमात्मा के अर्पण कर देना है।

मुनिवरों! जैसा अभी-अभी व्याख्यान कर रहे थे कि संध्या में सबसे पूर्व **'शन्नो देवी'** आता है! हे 'शन्नो'। तू देवी है तू हमारे कण्ठ में विराजमान हो। मुनिवरों! वह शन्नो हमारे कण्ठ में विराजमान हो जाती है। इसके पश्चात् आता है। चक्षुः चक्षुः। आगे प्रत्येक इन्द्रिय के लिए प्रभु से याचना करते हैं कि हे प्रभु तू हमारे चक्षुओं को पवित्र बना और कैसा बना कि हमारे द्वारा पाप दृष्टि न हो। यदि हमारे चक्षुओं में पापाचार की दृष्टि आ गई तो वास्तव में हम पापी बन जाएँगे और एक समय वह आएगा कि वह पाप दृष्टि हमारा मूल बन करके हमारा विनाश कर देगी।

हे विधाता! हमारे जो श्रोत्र हैं यह आपकी वार्ता को स्वीकार करते रहें। दूसरों की निन्दा को स्वीकार न करें। ये आज गुणों को धारण करने वाले बनें। दूसरों के गुणों की वार्ताओं को श्रवण करें। इसी प्रकार मुनिवरों! हमारे जो हस्त हैं यह आपके अर्पण हैं विधाता! इन्हें पवित्र करो। भुजा हमारे पवित्र हों। 'यशोबलम्' पवित्र हो। यह कैसे पवित्र बनेंगे? जब प्रभु का गुणगान गाएँगे और इन सबको प्रभु के अर्पण कर देंगे। हम श्रद्धालु बन करके उस प्रभु का अनुकरण करते हैं तो वास्तव में हमारे भुजा विधाता से कहा करते हैं कि हे विधाता! यशोबलम्। यह किसी प्रकार भी ऐसा कार्य न करें कि किसी निरपराधी को दण्ड दें। यदि निरपराधी को दण्ड देंगे तो विधाता हमारा विनाश हो जाएगा। द्वितीय आकर हमारे पर आक्रमण करेगा। आज हम यह चाहते हैं कि हमारे भुजा पवित्र कार्य करें। आज जब हम निरपराधी की रक्षा करेंगे तो वास्तव में कल्याण होगा। हे देव! कल्याण के करने हारे! तू आ और हे भगवन्! हम तेरे अर्पण हैं।

मुनिवरों! देखो, इसके पश्चात् आगे चलकर यह पद अशुद्ध मार्ग पर न चलें। यह उस मार्ग में चले जहाँ ऋषि महार्षियों का सत्सङ्ग हो रहा हो। यह उस मार्ग को चलें जहाँ प्रभु! आपका गुणगान गाया जा रहा हो। जहाँ दुराचारियों का गुण गान गाया जा रहा हो उस मार्ग को न चलें, वह मार्ग मानव के कल्याण के लिए नहीं है।

आगे सन्ध्या की व्याहृतियाँ क्या कह रही हैं बेटा! अङ्ग हमारे पवित्र हों। हृदय उदार हो, पवित्र हो।

इसी प्रकार मुनिवरों! आगे चलकर प्राणायाम क्रिया करके मार्जन किया करते हैं। प्राणायाम से कहते हैं भूः, भूवः, स्वः, महः, जनः, तपः, सत्यम,। हे विधाता! प्राणायाम करें, समाधि में लय हो जायें जिससे हम इन भूः, भूवः, स्वः, महः, जनः, तपः लोक लोकान्तरों में पहुंच सकते हैं। विधाता! हमारे द्वारा और कोई साधन नहीं जिससे हम इन लोक लोकान्तरों को जान सकेंगे हम आपकी महिमा को देख सकें। यह है मुनिवरों! सबसे पूर्व अपने को बनाना।

क्रमशः.....

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. संसार में जो धर्म है वह मानव की व्यापकता में विराजमान होता है।
2. संसार में आने का उद्देश्य केवल यह है हम अपने मानवत्त्व में जानने का प्रयास करें।
3. मानव का जीवन और प्राण उसका कर्त्तव्यवाद है।
4. ब्रह्मचर्य आश्रम के पश्चात् जो गृह आश्रम में प्रविष्ट होता है उसे व्यापक होने की आवश्यकता है।
5. तीन प्रकार की अग्नि पायी जाती हैं–गार्हपत्य, गृहपत्य और आरण्य।
6. जहाँ मानव अपने जीवन को जान जाता है, वहाँ अपने जीवन की प्रक्रियाओं को भी जान जाता है।
7. इस मानव शरीर को जानना सर्वस्त्र ब्रह्माण्ड को जानने के तुल्य है।
8. आत्मा किसी काल में भी नष्ट नहीं होती।
9. जो देवता प्रकृति के प्राणी होते हैं, वह आत्मविश्वासी होते हैं।
10. जो दैत्य प्रकृति के होते हैं, वह बिना विचारे आत्मा और विज्ञान को पाखण्ड कहा करते हैं।
11. जो केवल शरीर का पालन करते हैं, आत्मा को भोजन न देना यह सब दैत्य प्रकृति के प्राणी होते हैं।
12. इन्द्रियों को और उनके विषयों को जानना उनकी वास्तविकता को जानना ही धर्म है।
13. मानव को अपना जीवन बनाना ही उसका कर्त्तव्य है।
14. शरीर का निर्माण माता नहीं करती परन्तु उसकी प्रवृत्तियों का, उसके विचारों का चुनाव माता के द्वारा होता है।
15. चरित्र की जो प्रारम्भिकता है वह मानव के विचारों से और आत्मविश्वास से होती है।
16. संसार में विजय उसकी होती है, जो आत्मविश्वासी होते हैं।
17. मानव के जितने भी व्यापक विचार होते हैं, उतना उसमें कर्त्तव्य और आत्माविश्वास होता है।

॥ ओ३म् ॥

विनम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व जन्म के शृङ्गी ऋषि) की तपोस्थली लाक्षागृह बरनावा की पावन भूमि पर उनके द्वारा स्थापित आश्रम, गुरुकुल व गौशाला संचालित हो रहे हैं। आश्रम पर प्रति वर्ष रक्षा बन्धन, गुरुदेव के जन्मोत्सव पर सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवम् फाल्गुन मास में पाँच यज्ञशालाओं पर चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाता है तथा गुरुकुल में 100 के लगभग ब्रह्मचारी छठी से बारहवीं तक निःशुल्क शिक्षा ग्रहण करते हैं एवम् गौशाला में भी 40 के लगभग गौवंश हैं। इन कार्यों के लिए 6 अध्यापक व पाँच कर्मचारी भी संस्था की ओर से कार्यरत हैं। गुरुजी के समय से ही ये सब आयोजन आप सब दानियों के सात्त्विक दान से सम्पन्न हो रहे हैं। कोरोना महामारी मे लॉक डाउन के समय भी 2-3 अगस्त (रक्षा बन्धन) एवं 4-5 सितम्बर (गुरुदेव का जन्मदिन) को भी विधि-विधान से सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन हुआ है। लेकिन प्रशासन की अनुमति न मिलने के कारण श्रद्धालु, यज्ञ-प्रेमी, दानदाता उक्त यज्ञों में न तो भाग ले सके और न ही अपना सहयोग प्रदान कर सके। उक्त कारण वर्तमान समय में आश्रम संचालन में आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इस कारण आप सभी श्रद्धालु यज्ञ-प्रेमियों से विनम्र-निवेदन है कि अपनी श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार संस्था के निम्न खाता संख्या में अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

श्री गाँधी धाम समिति लाक्षागृह बरनावा (बागपत)

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया बरनावा (बागपत)

खाता संख्या : 11650180365 **IFC कोड :** SBIN0006602

—: निवेदक :—

यशोधर्मा सोलंकी	**राजपाल त्यागी**	**ठा. वीर सिंह**
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
विनोद शास्त्री	**गुरुवचन शास्त्री**	**अरविन्द शास्त्री**
प्रधानाचार्य	सहायक अध्यापक	सहायक अध्यापक

एवम् समस्त गुरुकुल परिवार

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

प्रभु! हम चाहते क्या हैं? हमारी कामना क्या है? हमारी एक ही तो कामना है कि हमारा हृदय स्वच्छ बन जाए। हमारे हृदय में श्रद्धा उत्पन्न हो जाए। हम सत्य को स्वीकार करने लगें। सत्य क्या है? सत्य वह कहलाता है जो प्रभु का दिग्दर्शन है, सत्य मानवीय दर्शन है। मानवीय दर्शन क्या है? अपने में ही अपनेपन का दर्शन करना, वह मानवीय दर्शन कहलाता है।

इसीलिए हे प्रभु! मैं श्रद्धा के क्षेत्र में जाना चाहता हूँ। क्योंकि श्रद्धा हृदय में रहती है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 49 : अंक : 573
अक्टूबर 2020

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-10-2020
Published on 5th day of the same month